tHE PRACTICE
STRATEGIC COMMUNICATIONS

PUBLICATION: Economic Times (Hindi)
EDITION: NEW DELHI

DATE: 12/12/08

समाज सेवा और कारोबार का नया संगम

बिहार की संस्था निदान को मिला इस साल सामाजिक उद्यमिता के लिए खेमका फाउंडेशन का सम्मान

अभिषेक श्रीवास्तव

नई दिल्ली

दिसंबर की एक सुबह दिल्ली के इंडिया हैबिटाट सेंटर की लॉन में गुनगुनी धूप तले प्रेमा गोपालन माइक्रो फाइनेंस का एक ऐसा मंत्र देती हैं जिससे आज सामाजिक सेवा क्षेत्र के इस 'बज वर्ड' की परतें हम आसानी से खोल सकते हैं, 'माइक्रो फाइनेंस कोई चैरिटी नहीं है!' वास्तव में, इसी बात की गहरी समझ ने उन्हें न सिर्फ सामाजिक कार्यकर्ता, बल्कि एक उद्यमी के रूप में भी पहचान दिलाई है। स्वयं शिक्षण प्रयोग नामक मुंबई स्थित संस्था की संस्थापक प्रेमा यूएनडीपी और श्वाबे की संयुक्त भागीदारी वाले खेमका फाउंडेशन के सामाजिक उद्यमिता पुरस्कार 2008 के तीन फाइनलिस्ट में एक हैं। पिछले महीने दिए गए इस पुरस्कार में विजेता न बन पाने का उन्हें मलाल नहीं है बल्कि दिल में भरोसा है कि भ्रष्ट राजनीति और आतंक के इस दौर में लघु वित्त के माध्यम से करोड़ों लोगों को गरीबी के गर्त से निकाला जा सकता है। इसमें काम में औजार बना है उनका सखी शिक्षण केंद्र (एसएसके), जो समूचे मराठवाड़ा में फैला हुआ है।

इस साल यह पुरस्कार जीतने वाले शख्स हैं पटना के अरविंद सिंह, जो निदान नाम की संस्था चलाते हैं। उनका काम भी लघु वित्त और गरीबों को दिए जाने वाले लघु ऋण के इर्द-गिर्द केंद्रित है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से स्नातक और बाद में दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से पढ़ाई करने वाले अरविंद की जिंदगी को एक तमिल महिला विजी श्रीनिवासन ने नया मोड़ दिया, जो पटना में अदिति नामक संस्था चलाती थीं। आज वह तकरीबन समूचे बिहार में असंगठित क्षेत्र के लोगों को बीमा, लघु वित्त, लघु ऋण और पेंशन समेत रेमिटेंस

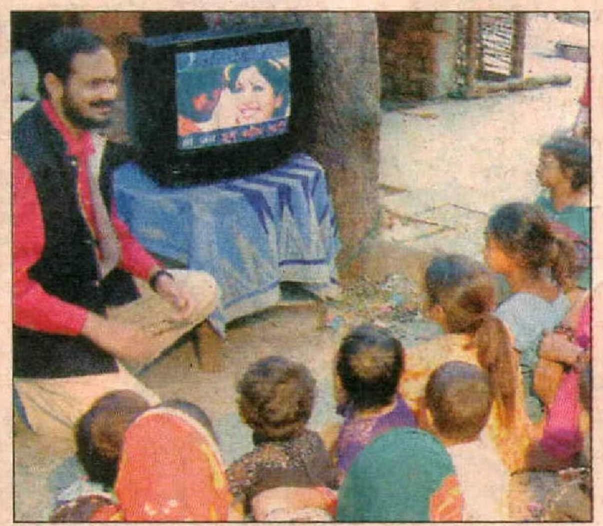

प्लैनेटरीड के संस्थापक बृज कोठारी

सुविधाएं मुहैया करा रहे हैं। उन्होंने अपने काम को संगठित रूप देने के लिए एक कचरा प्रबंधन कंपनी 1996 में बनाई थी, जिसकी आय आज प्रतिमाह 10 लाख रुपए है। इसमें समुदाय के 400 लोग कार्यरत हैं। अरविंद बताते हैं, 'बिहार में सरकार बदलने का एक फर्क तो पड़ा है कि ऋण देने वाली एजेंसियां अब हमारे काम को गंभीरता से ले रही हैं।' उन्होंने ऋण और बीमा सेवाओं के लिए आईसीआईसीआई, एसबीआई और एचडीएफसी, बिड़ला सनलाइफ, एलआईसी और आईसीआईसीआई लोम्बार्ड के साथ गठजोड़ किया हुआ है।

इन दोनों से बिल्कुल अलग हैं बृज कोठारी, जिन्हें सामाजिक बदलाव का अपना औजार आज से बारह साल पहले दोस्तों के साथ एक स्पैनिश फिल्म देखते हुए मिला। उन्हें लगा कि यदि स्पैनिश फिल्मों में सबटाइटिल भी स्पैनिश हो, तो समझने में कोई दिक्कत न आए। यहीं से साक्षरता की एक नई सूझ उनमें आई, कि हिंदी वीडियो में सबटाइटल भी हिंदी में दिए जाएं। बृज खेमका पुरस्कारों के लिए चुने गए तीन उद्यमियों में से एक थे। उनकी दो संस्थाएं प्लैनेटरीड और बुकबॉक्स इस काम को आज अंजाम दे रही हैं जिसमें आईआईएम-अहमदाबाद का अहम योगदान है। इन संस्थाओं ने आईआईएम में ही जन्म लिया।

उनके उद्यम की उपयोगिता को उनके शब्दों में ही समझा जा सकता है, 'आईआईएम में चल रही हमारी एसएलएस परियोजना और प्लैनेटरीड का सालाना बजट एक करोड़ रुपए है। इतने में हम 20 करोड़ पढ़ने में कमजोर लोगों को हफ्ते में आधा घंटा पढ़ने का मौका दे पाते हैं यानी एक व्यक्ति के लिए पढ़ाई का सालाना खर्च 5 पैसे आता है। सरकार ऐसे ही किसी कार्यक्रम के लिए 150 रुपए सालाना एक आदमी पर खर्च करती है यानी एसएलएस पर खर्च किए गए हर करोड़ रुपए पर सामाजिक रिटर्न 3,000 करोड़ रुपया बैठता है!' आज बुकबॉक्स का स्टार टीवी, टाइम्स ग्रुप और हंगामा मोबाइल के साथ करार है। अब तक निदान और बुकबॉक्स को कोई निजी निवेश हासिल नहीं हुआ है, हालांकि उन्हें जल्द ही इसकी उम्मीद है। इस बारे में प्रेमा कहती हैं, 'निजी निवेश से हम बचते हैं क्योंकि इससे कंपनी का नियंत्रण समुदाय के हाथों से निकल जाता है।'

बृज याद करते हैं, 'मेरे जीवन का सबसे बहुमूल्य क्षण वह था जब मैंने गांव की एक लड़की को हाथ में सबटाइटिल लेकर गाना गाते हुए देखा। तब मुझे लगा कि हम सही रास्ते पर जा रहे हैं।' आज ऐसी करोड़ों लड़कियों को शिक्षा, आजीविका और जीवन प्रदान करने में निदान, एसएसके जैसी संस्थाएं लगी हुई हैं जिन्हें देर से ही सही, कॉरपोरेट जगत मान्यता दे रहा है।